क्रांति समय
हिन्दी दैनिक अखबार में विज्ञापन, प्रेस नोट, जन्म दिन की शुभकामनाएँ, या अपने विस्तार में किसी भी समस्या को अखबार में प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 9879141480

दैनिक
क्रांति समय

RNI.No. : GUJHIN/2018/75100

क्रांति समय
हमारे यहां पर एल.आई.सी., कार-बाईक-ट्रक का इन्सयोरेंशन, रेल टिकट, एयर टिकट बनवाने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 8980974047

संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480
E-mail: krantisamay@gmail.com

सूरत, वर्ष: 02 अंक: 64, शुक्रवार, 29 मार्च, 2019, पेज: 4, मुल्य 1 रु.
रजीस्ट्रड ऑफिस:- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात

Email: krantisamay@gmail.com Web site : www.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

कांग्रेस ने पीएम को बताया ड्रामा किंग, कहा: मोदी जी ने सारी मर्यादाएं की पार

नेशनल डेस्क। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मेरठ रैली के बाद पलटवार करते हुए उन्हे ड्रामा किंग बताया। कांग्रेस प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने प्रेस कांफ्रेंस कर कहा कि मोदी जी को दिन रात राहुल गांधी और कांग्रेस के सपने आते हैं। अगर वह जरा सा भी समय देश के लिए लगाते तो आज उनकी यह हालत नहीं होती। पीएम मोदी ने योजना का मजाक उड़ाना देश के गरीबों का मजाक उड़ाना है। मेरठ के किसानों को जवाब दें मोदी कि बीजेपी ने 14 दिनों में जो बकाया चुकाने का वादा किया था, उसका क्या हुआ। एसपी, आरएलडी और बीएसपी की तुलना शराब से करके पीएम मोदी ने सारी मर्यादाएं पार कर दी हैं। लोकतांत्रिक तरीके से चुनाव लड़ रहे तीन दलों को शराब बताना कहां तक उचित है? लेकिन हम आपसे इससे अच्छे की उम्मीद नहीं कर सकते। इससे पहले भी मोदी जी ने नोटबंदी करके देश के गरीबों का मजाक उड़ाया था।

प्रधानमंत्री चुनावी लाभ के लिए कर रहे सरकारी तंत्र का दुरुपयोग : मायावती

लखनऊ । बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने गुरुवार को प्रधानमंत्री मोदी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग की बिना पूर्व अनुमति के प्रधानमंत्री ने देश के नाम प्रसारण क्यों व कैसे किया जबकि देश में इमरजेंसी जैसे कोई हालात नहीं थे। यह चुनावी लाभ हेतु सरकारी तंत्र का दुरुपयोग है। उन्होंने ट्वीट किया, पिछले अनुभव साबित करते हैं कि भाजपा के नेतागण नये-नये तरीकों से चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन करने में माहिर व बदनाम रहे हैं और कल फिर बिना पूर्व अनुमति के ही पीएम मोदी ने देश को संबोधित किया जबकि कोई इमरजेंसी नहीं थी। देश सांस रोके परेशान रहा। आयोग कृपया सख्ती करे। उन्होंने आगे लिखा, चुनाव आयोग द्वारा पीएम मोदी के कल के भाषण की जांच हेतु कमेटी बनाना अच्छी बात है, किन्तु मूल प्रश्न यह है कि आयोग की बिना पूर्व अनुमति के पीएम ने देश के नाम प्रसारण क्यों व कैसे किया, जबकि देश में इमरजेंसी जैसे कोई हालात नहीं थे। यह चुनावी लाभ हेतु सरकारी तंत्र का दुरुपयोग है।

रायबरेली में भी प्रियंका के खिलाफ पोस्टरवॉर

लखनऊ/रायबरेली । कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा अपने चुनावी प्रचार के तहत गुरुवार को कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी के निर्वाचन क्षेत्र रायबरेली में रहेंगी। उनके पहुंचने से पहले यहां भी उनके खिलाफ पोस्टर वॉर शुरू हो गई है। रायबरेली में तिलक भवन स्थित जिला कांग्रेस कार्यालय के पास सांसद सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा पर निशाना साधते हुए पोस्टर लगे दिखाई दिए, जिन पर लिखा है, जब जब आई संकट की घड़ी, कबो न महतारी बिटिया दिखाई पड़ी। सेवा के लिए दिहने रहै वोट, लेकिन प्रियंका सोनिया किहिन दिल पर चोट। फिरोज की नातिन रेहान की माई, चुनाव मा मंदिर-मंदिर परी दिखाई। हालांकि यह पोस्टर किसने लगवाए हैं, उसका नाम नहीं है।

मेरठ रैली

मेरठ रैली में मोदी ने रालोद व सपा-बसपा को बताया सराब, कहा- सेहत के लिए खतरनाक

मेरठ ।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को मेरठ में एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए लोकसक्षा चुनाव 2019 के लिए बीजेपी के प्रचार अभियान का दमदार आगाज किया। इस दौरान उन्होंने समाजवादी पार्टी (सपा), राष्ट्रीय लोक दल (रालोद) और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) पर जमकर निशाना साधा। मेरठ के सिवाया टोल प्लाजा के पास स्थित मैदान में आयोजित विशाल रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने अपनी चिर-परिचित शैली में बोलते हुए कहा कि सपा का 'स', रालोद का 'रा' और बसपा का 'ब' (सराब) से बचें, क्योंकि ये सेहत के लिए बेहद हानिकारक हैं। अपने पहले चुनावी भाषण में पीएम मोदी के निशाने पर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी, समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव, बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती और राष्ट्रीय लोकदल रहे। अपने संबोधन की शुरुआत में मोदी ने कहा, 2019 का चुनाव प्रचार मेरठ से शुरू करने की एक वजह है कि 1857 में स्वतंत्रता आंदोलन में मेरठ से ही आजादी का बिगुल फूंका गया था। मोदी ने कहा, इस देश ने सिर्फ नारे लगाने वाली बहुत सरकारें देखी हैं लेकिन पहली बार ऐसी निर्णायक सरकार भी देख रहा है, जो अपने संकल्प को सिद्ध करना जानती है। हमारा विजन एक ऐसे नए भारत का है, जो अपने गौरवशाली अतीत के अनुरूप ही वैभवशाली होगा। एक ऐसा नया भारत जिसकी नई पहचान होगी, जहां सुरक्षा, समृद्धि और सम्मान के संस्कार होंगे।उन्होंने कहा, आज एक तरफ नए भारत के संस्कार हैं, तो दूसरी तरफ वंशवाद और भ्रष्टाचार का विस्तार है। एक तरफ दमदार चौकीदार है, तो दूसरी तरफ दागदारों की भरमार है। आज एक तरफ विकास का ठोस आधार है, दूसरी तरफ न नीति है, न विचार है, न ही नीयत है। सर्जिकल स्ट्राइक का जिक्र करते हुए पीएम मोदी ने कहा, जमीन हो, आसमान हो या फिर अंतरिक्ष, सर्जिकल स्ट्राइक का साहस आपके इसी चौकीदार की सरकार ने करके दिखाया है। मोदी ने कहा, स्थिति ये है कि कुछ दिन पहले जो चौकीदार को चुनौती देते फिरते थे वो आज रोते फिरते हैं। मोदी ने पाकिस्तान को घर में घुसकर क्यों मारा, आतंकियों के अड्डे नष्ट क्यों किए, इन बातों पर रो रहे हैं। पीएम मोदी ने कहा, विरोधी दल मुझसे सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के सबूत मांगते हैं। मैं देशवासियों से पूछना चाहता हूं कि हमें सबूत चाहिए या सपूत। मेरे देश के सपूत ही मेरे देश के सबसे बड़े सबूत हैं, जो सबूत मांगते हैं, वो सपूत को ललकारते हैं। उन्होंने महागठबंधन पर तंज किया, सारे महामिलावटी लोग, कौन पाकिस्तान में ज्यादा पॉपुलर होगा इस प्रतिस्पर्धा में लगे हैं। वहां की मीडिया में छाए हुए हैं। आपको तय करना है कि आपको हिंदुस्तान के हीरो चाहिए या पाकिस्तान के? पीएम ने कहा, जब देश अपनी सामर्थ्य बढ़ा रहा रहा है, अपनी ताकत बढ़ा रहा और अंतरिक्ष में चौकीदारी कर रहा है तो कुछ लोगों के पेट में दर्द हो रहा है।राहुल गांधी पर दोबारा कटाक्ष करते हुए पीएम ने कहा, कुछ बुद्धिमान लोग ऐसे हैं, जब कल मैं की बात करता था वो कन्फ्यूज़ हो गए। वो समझे कि मैं थिएटर के सेट की बात कर रहा हूं. जिनको थिएटर के सेट और सैटैलाइट के में फर्क नहीं पता, ऐसे बुद्धिमान लोगों पर रोएं या हंसें? प्रधानमंत्री ने कहा, मैं देश के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगाने के लिए तैयार रहने वाला व्यक्ति हूं. कोई भी राजनीतिक दबाव, कोई भी अंतरराष्ट्रीय दबाव, आपके इस चौकीदार को डिगा नहीं पाएगा और न कोई डरा पाएगा। राहुल गांधी के मिनिमम इनकम गारंटी के ऐलान पर तंज कसते हुए पीएम ने कहा, जब मैं बैंक खाते खुलवाता था, तो कुछ बुद्धिमान लोग कहते थे कि देश में बैंक ही नहीं है, खाते से क्या होगा. अब देखिए. जो 70 साल में बैंक खाता नहीं खुलवा सके, वो आज कहते हैं कि खाते में पैसा डालेंगे।कांग्रेस के गरीबी हटाओ कैंपेन पर पीएम ने कहा, जब मैं 8-10 साल की उम्र का था, तब सुनता था कि सरकार गरीबी हटाने के बारे में बात कर रही है। जब 20-22 साल का हुआ तो इंदिरा गांधी भी कहती थी कि गरीबी हटाएंगे। इसके बाद भी चार-चार पीढ़ियां यही कहती रहीं। वो तो आगे बढ़ते रहे लेकिन गरीब, गरीब ही रह गया। मोदी ने कहा, गरीबों के साथ गद्दारी करने वाली कांग्रेस को देश का गरीब अब पूरी तरह हटाकर ही दम लेगा। पीएम ने कहा, यहां मेरठ में विरोधी दलों के जो उम्मीदवार हैं, उन्होंने तो आतंकवादियों के लिए करोड़ों रुपये के इनाम तक का ऐलान कर दिया था। अब आप सोचिए, महामिलावट के लिए ये लोग किस हद तक जा सकते है।

सिर्फ मोदी ही सीमाओं की कर सकते हैं रक्षा:अमित शाह

नेशनल डेस्क। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने वीरवार को कहा कि कांग्रेस पार्टी और उसके अध्यक्ष राहुल गांधी नहीं बल्कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही देश की सीमाओं की रक्षा कर सकते हैं। उन्होंने पाकिस्तान के बालाकोट में हवाई हमले में मारे गए लोगों की संख्या के संबंध में सबूत मांगने के लिए भी कांग्रेस की आलोचना की। भाजपा अध्यक्ष ने एक चुनावी रैली में दावा किया कि मोदी के तहत भारत अपने सैनिकों के खून का बदला लेने वाला अमेरिका और इजराइल के बाद दुनिया का तीसरा देश बन गया है। उन्होंने कहा कि क्या हमें अपने सैनिकों के खून का बदला नहीं लेना चाहिए? कांग्रेस देश की सीमा की रक्षा नहीं कर सकती।

केवल भाजपा और नरेंद्र मोदी ही ऐसा कर सकते हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेता ने कहा कि मोदी के नेतृत्व में भारत ने पाकिस्तान स्थित आतंकवादी तत्वों द्वारा उरी और पुलवामा हमलों के बाद सैनिकों के खून का बदला लिया। शाह भाजपा के सहयोगी दल अगप के मोनिमाधब महंत के लिए चुनाव प्रचार कर रहे थे जो कलियाबोर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि सोनिया गांधी और मनमोहन सिंह सरकार के 10 वर्षों में, हमारे सैनिकों के सिर काट दिए गए थे। लेकिन भारत की तरफ से कोई जवाब नहीं दिया गया।

युवा और बुजुर्ग प्रत्याशियों की प्रतिष्ठा दाव पर

नई दिल्ली।

लोकसभा चुनाव में अलग-अलग दलों से विभिन्न आयु वर्ग वाले प्रत्याशी चुनावी मैदान में हैं। इस बार युवा और बुजुर्ग प्रत्याशियों की प्रतिष्ठा भी दाव पर लगी हुई है। युवा नए जोश और उत्साह के साथ जनता के बीच लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं, वहीं उम्रदराज उम्मीदवार अपने अनुभव के आधार पर जनता के बीच विकास के वायदे रखने में जुटे हैं। 70 वर्ष की आयु से अधिक होने के चलते भाजपा ने लालकृष्ण अडवाणी और मुरली मनोहर जोशी का टिकट काट दिया है। इसी के साथ भाजपा ने कई युवा चेहरों को भी तरजीह नुसरत जहां: कोलकाता की रहने वाली बंगाली फिल्मों की अभिनेत्री और मॉडल नुसरत जहां (29) ने अपने छोटे से फिल्मी करियर में कई टॉप स्टार्स के साथ काम किया है। तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) ने नुसरत जहां को बंगलादेश की सीमा से सटे बशीरहाट सीट से चुनावी मैदान में उतारा है। तेजस्वी सूर्या : भारतीय जनता पार्टी ने दिग्गज नेता रहे अनंत कुमार की परंपरागत सीट दक्षिण बेंगलूर से इस बार 28 साल के तेजस्वी सूर्या को अपना प्रत्याशी घोषित किया है। ब्राह्मण परिवार से ताल्लुक रखने वाले तेजस्वी सूर्या को मिलनसार छवि और तेजतर्रार युवा नेता के तौर पर जाना जाता है। कुमार (32) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी. आई.) के टिकट से बेगुसराय सीट से लोकसभा चुनाव लड़ेंगे। इसकी घोषणा सी.पी.आई. नेता सुरवरम सुधाकर रेड्डी ने की है। यहां भाजपा के फायरब्रांड नेता गिरिराज सिंह के मुकाबले जे.एन.यू. छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार मैदान में होंगे अक्षय यादव : 32 वर्षीय अक्षय यादव मुलायम सिंह के भाई राम गोपाल यादव के बेटे हैं। वह 2014 में फिरोजाबाद से सांसद चुने गए थे। समाजवादी पार्टी ने एक बार फिर से अक्षय यादव को फिरोजाबाद से ही चुनावी मुकाबले में उतारा है। हैरानी वाली बात यह है कि सपा से अलग हो चुके शिवपाल यादव प्रगतिशील समाजवादी पार्टी (लोहिया) की टिकट पर खुद फिरोजाबाद लोकसभा सीट से चुनावी मैदान में हैं। मिमी चक्रवर्ती : जानी-मानी फिल्म अभिनेत्री 30 वर्षीय मिमी चक्रवर्ती को तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) ने जादवपुर लोकसभा सीट से चुनावी मैदान में अपना प्रत्याशी घोषित किया है।

सोनिया गांधी : 72 वर्षीय सोनिया गांधी एक बार फिर से रायबरेली लोकसभा सीट से चुनाव मैदान में हैं। सीटों पर नाम के ऐलान से पहले कयास लगाए जा रहे थे कि सोनिया वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में शायद चुनावी मुकाबले में न उतरें। हालांकि कांग्रेस की पहली ही लिस्ट में इन तमाम कयासों पर विराम लग गया।

इलाहाबाद: अपने गृह जिले में भाजपा को जिताने का रीता पर है दारोमदार

प्रयागराज । भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने उत्तर प्रदेश की इलाहाबाद लोकसभा सीट से प्रदेश सरकार में महिला, परिवार कल्याण और पर्यटन मंत्री डॉ. रीता बहुगुणा जोशी को टिकट दिया है। डॉ. जोशी का यह गृह जिला है और पार्टी को उम्मीद है कि वह इस वजह से यहां की सीट उसकी झोली में डाल सकती हैं। डॉ. रीता बहुगुणा जोशी इलाहाबाद की महौपौर रह चुकी हैं और कांग्रेस से भाजपा में आयी हैं। उन्होंने भाजपा के टिकट पर 2017 में हुये प्रदेश विधानसभा चुनाव में लखनऊ की कैंट सीट से जीत हासिल की थी। डॉ. जोशी ने उस चुनाव में समाजवादी पार्टी (सपा) संरक्षक मुलायम सिंह यादव की छोटी बहू अपर्णा को पराजित किया था। डॉ. जोशी के लिए यह शहर नया नहीं है। यह उनका गृह जिला है। वर्ष 2016 में भाजपा में शामिल होने से पहले 24 साल तक वह कांग्रेस में महत्वपूर्ण पदों पर रहीं। राजनीति के जानकारों का मानना है कि भाजपा ने शायद लखनऊ में उनकी जीत से आशान्वित होकर ही इलाहाबाद संसदीय सीट से डॉ. जोशी को उतारा है। वर्ष 2014 में मोदी लहर थी। जिसका लाभ 2017 में हुए प्रदेश विधानसभा चुनाव में भी भाजपा को मिला लेकिन अब 17वीं लोकसभा के चुनाव में 2014 की वह लहर नजर नहीं आ रही है। ।

भोपाल की जनता के साथ दिग्विजय ने किया लगातार अन्याय : उमा

भोपाल।

मध्यप्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने आज पूर्व मुख्यमंत्री और भोपाल संसदीय सीट से कांग्रेस प्रत्याशी दिग्विजय सिंह पर जबर्दस्त हमला बोलते हुए कहा कि भोपाल की जनता से अन्याय करने वाले सिंह अब जनता दरबार में पेश होंगे और जनता उन्हें प्रचंड मतों से हराकर इसका बदला चुकाएगी। भारती ने एक के बाद एक 10 ट्वीट करते हुए सिंह पर लगातार हमले बोले। उन्होंने कहा कि सिंह के पुत्र जयवर्धन सिंह ने उन्हें भोपाल से सिंह के खिलाफ चुनाव लड़ने की चुनौती दी है। उन्होंने कहा कि सिंह को तो भारतीय जनता पार्टी का कोई भी कार्यकर्ता चुनाव हरा देगा, इसलिए वे भोपाल चुनाव लड़ने नहीं, पर प्रचार करने जरूर आएंगी। इसी क्रम में उन्होंने कहा कि उन्होंने भोपाल के पेयजल संकट निवारण के लिए नर्मदा जल लाने की घोषणा की एवं भोपाल सांसद रहते हुए इसकी तैयारी भी करवा ली। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने नर्मदा सागर बांध की स्वीकृति देते समय इसका प्रावधान कर दिया था, लेकिन उस समय इस योजना को असंभव बताते हुए सिंह ने इसकी खिल्ली उड़ाई। भारती ने दावा किया कि सिंह ने प्रदेश के मुख्यमंत्री रहते हुए भी इस योजना को लाने में रुकावटें खड़ी कीं। भाजपा नेत्री ने कहा कि जब वे 2003 दिसंबर में प्रदेश की मुख्यमंत्री बनीं, तब पहली कैबिनेट में भोपाल में नर्मदा जल लाने के प्रस्ताव को स्वीकृति मिली। उन्होंने कहा कि सिंह के मुख्यमंत्री रहते हुए 40 हजार दैनिक वेतन भोगियों को एक झटके में निकाल दिया गया, जिसमें भोपाल के भी हजारों लोग थे। उन सबको भी उन्होंने भाजपा की सरकार बनने के बाद अपनी पहली कैबिनेट में बहाल किया। भारती ने आगे कहा कि जब उन्होंने भोपाल एयपोर्ट का नाम भोजपाल करवाया तो उस कार्यक्रम में स्वीकृति देने के बावजूद भी सिंह नहीं आए, क्योंकि वो इस बात से प्रसन्न नहीं थे। उन्होंने कहा कि भोपाल का अपमान करने में एवं भोपाल की प्रगति रोकने में कांग्रेस नेता सिंह ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। केंद्रीय मंत्री भारती ने कहा कि यह अच्छा हुआ है । कि भोपाल की जनता के साथ इतना अन्याय करने वाले सिंह अब जनता के दरबार में पेश हो जाएंगे और भोपाल संसदीय क्षेत्र के नागरिक प्रचंड मतों से उन्हें हराकर अपना बदला चुकाएंगे। भोपाल संसदीय सीट से भाजपा ने अब तक अपना प्रत्याशी घोषित नहीं किया है। कांग्रेस के सिंह के खिलाफ भाजपा के संभावित दावेदारों की सूची में भारती का नाम भी शामिल है।

भारत के एक्शन से डरा पाकिस्तान, पाक में बंद किये 4 आतंकी कैंप

नई दिल्ली ।

14 फरवरी को पुलवामा में हुए आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीत तल्खी के संबंध बने हुए हैं। भारतीय सेना पाकिस्तान को उसके हर हमले का मुंहतोड़ जवाब दे रही है। पाकिस्तान के खिलाफ भारतीय सेना के इन हमलों का उस पार मौजूद आतंकी संगठनों में काफी खौफ दिख रहा है। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में मौजूद 4 आतंकी कैंपों को बंद कर दिया गया है। ये इसलिए किया गया है कि क्योंकि भारतीय सेना लगातार इन्हें निशाना बना रही हैं। खुफिया इनपुट्स की मानें तो 16 मार्च को में एक बैठक हुई, निकियाल में हुई इस बैठक में पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी ढ्रस्ढ और लश्कर-ए-तैयबा के आतंकी अशफाक बड़वाल भी शामिल हुए थे। ये इलाका राजौरी क्षेत्र के आसपास का है। बैठक में ही ये तय किया गया है कि यहां पर मौजूद सभी आतंकी संगठनों को बंद जाए, क्योंकि भारत की ओर से लगातार सीज़फायर उल्लंघन का जवाब भारी गोलीबारी से दिया जा रहा है। इसकी वजह से ये कैंप भी निशाने पर आ सकते हैं। पाकिस्तान ने जिन कैंपों को बंद करने का फैसला किया है, वह कोटली और निकियाल सेक्ट में हैं जो सुदंरबनी और राजौरी के पास हैं। चारों आतंकी कैंपों का संचालन आतंकी अशफाक बड़वाल ही किया करता था, तभी ने अपना सीधा संदेश उसे ही दिया। जबकि दो कैंप पाला और बाघा क्षेत्र में हैं जो जैश-ए-मोहम्मद के द्वारा संचालित किए जाते हैं। गौरतलब है कि 14 फरवरी को पुलवामा आतंकी हमले के बाद से ही सीजफायर का उल्लंघन बढ़ा है।

सिर्फ 2019 में ही 634 बार सीजफायर का उल्लंघन किया गया है, जबकि पिछले साल 1629 बार सीजफायर का उल्लंघन किया गया था। पुलवामा में हुआ आतंकी हमला जैश-ए-मोहम्मद ने किया था, जिसमें भारत के 40 जवान मारे गए थे।

भाजपा के गढ़ बैतूल में कांग्रेस को जीत की उम्मीद

बैतूल । भारतीय जनता पार्टी का गढ़ मानी जाने वाली मध्यप्रदेश की बैतूल संसदीय सीट पर इस बार जहां पार्टी ने फर्जी जाति प्रमाणपत्र मामले के चलते विवादों में घिरी सांसद ज्योति धुर्वे का टिकट काट कर एक शिक्षक पर भरोसा जताया है, वहीं कांग्रेस ने अपेक्षाकृत युवा चेहरे को मैदान में उतार कर मुकाबले को और रोचक बना दिया है। अनुसूचित जनजाति के लिए सुरक्षित इस सीट पर पिछले आठ चुनावों में से भाजपा ने सात बार जीत हासिल की है। वर्तमान में यहां से धुर्वे सांसद हैं। उनका जाति प्रमाणपत्र फर्जी पाये जाने के बाद जिला कलेक्टर ने उसे निरस्त कर दिया था। भाजपा ने इस बार उनका टिकट काट कर पेशे से शिक्षक डीडी उइके को मैदान में उतारा है। करीब तीन चार दशक से यहां हार का सामना कर रही कांग्रेस ने इस बार रामू टेकाम (32) पर दांव लगाया है। विधानसभा चुनाव में बैतूल संसदीय क्षेत्र में भाजपा का गढ़ कहलाने वाली चार विधानसभाओं पर जीत से कांग्रेस में खासा उत्साह है और वह इस सीट को अपनी झोली में डालने के लिए बेताव है। सीट पर 1951 में हुये पहले चुनाव में कांग्रेस को जीत मिली थी। साल 1967 और 1971 के चुनाव में भी इस सीट पर कांग्रेस ने ही जीत हासिल की लेकिन 1977 के चुनाव में यह सीट कांग्रेस के हाथ से निकल कर भारतीय लोकदल के पास चली गई। कांग्रेस ने 1980 में यहां वापसी की और गुफरान आजम सांसद बने। इसके अगले चुनाव 1984 में भी कांग्रेस को जीत मिली।

भाजपा ने पहली बार यहां आरिफ बेग के माध्यम से 1989 में जीत हासिल की। इसके अगले चुनाव 1991 में कांग्रेस के असलम शेरखान ने आरिफ बेग को मात देकर 1989 की हार का बदला ले लिया।

संपादकीय

आकाश में सर्जिकल स्ट्राइक

भारतीय वैज्ञानिक मेधा ने तब नई ऊंचाई छू ली, जब भारत ने स्वदेश निर्मित एंटी सैटेलाइट मिसाइल से पृथ्वी की लो-अर्थ ऑर्बिट में लक्षित सैटेलाइट को मार गिराया, जिसे प्रधानमंत्री ने अभूतपूर्व सिद्धि बताया तथा इसे 'मिशन शक्ति' नाम दिया। पृथ्वी से लगभग तीन सौ किमी की दूरी पर तीन मिनट में कठिन रास्ते से यह जटिल कार्रवाई पूरी हुई। इससे भारत अमेरिका, रूस और चीन के बाद दुनिया की चौथी अंतरिक्ष शक्ति बन गया। अब भविष्य में भारत अंतरिक्ष हमले और भारत की जासूसी करने वाले उपग्रहों को नाकाम कर सकेगा। साथ ही किसी भी सेना की कार्रवाई को बाधित कर सकता है। आज जब युद्ध लगातार गैर-परंपरागत तरीके से लड़े जा रहे हैं तो अंतरिक्ष युद्ध की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। बहरहाल, एक घंटे तक प्रधानमंत्री लगातार मीडिया के केंद्र में रहे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब ट्वीट करके देश को संबोधित करने की बात की तो मीडिया संस्थानों तथा आम लोगों में कौतूहल जागा। हालांकि, मंथन इस बात पर था कि आचार-संहिता लागू होने के कारण सरकार कोई नीतिगत फैसला लेने तथा चुनाव को प्रभावित करने वाली कोई घोषणा नहीं कर सकती तो आखिर किस बात पर प्रधानमंत्री संबोधित करेंगे। दरअसल, कोई आंतरिक व बाह्य खतरा भी सामने नहीं था। आठ नवंबर, 2016 के ऐसे ही संबोधन की कसक लोगों के मन में थी तो कयासों का दौर और तेज हो गया। वास्तव में, यह राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा ऐसा संवेदनशील मामला था कि इसे न तो सीधे तौर पर चुनाव प्रक्रिया के दौरान राजनीतिक हस्तक्षेप कहा जा सकता है और न ही वैज्ञानिकों की उपलब्धि को नकारा जा सकता है। जाहिर है राजनीतिक दृष्टि से संवेदनशील समय में हुए इस परीक्षण की सफलता की प्रधानमंत्री द्वारा घोषणा ने विपक्ष को निरुत्तर-सा कर दिया। हालांकि, विपक्षी दल इसके लिये डीआरडीओ के वैज्ञानिकों को बधाई देते जरूर नजर आये। कांग्रेस प्रवक्ता यह कहते रहे कि यह मिशन कांग्रेस के कार्यकाल में शुरू हो गया था। बहरहाल, किसी मिशन को करने का जोखिम उठाने का संबल भी किसी सरकार द्वारा ही दिया जाता है। दूसरी ओर इस परीक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय जगत की सहज प्रतिक्रिया हमारी कूटनीतिक जीत है क्योंकि जब चीन ने ऐसा प्रयोग किया था तो दुनिया में बड़ा विरोध हुआ था। इसकी वजह अंतरिक्ष में होने वाला कचरा भी है। बहरहाल, भविष्य के युद्ध में भारत को अतिरिक्त फायदा यह होगा कि दुश्मन के सैटेलाइट को जाम करने तथा उसके सैनिक मूवमेंट को बाधित करने की क्षमता भारत हासिल कर चुका है।

बहरहाल, किसी मिशन को करने का जोखिम उठाने का संबल भी किसी सरकार द्वारा ही दिया जाता है। दूसरी ओर इस परीक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय जगत की सहज प्रतिक्रिया हमारी कूटनीतिक जीत है क्योंकि जब चीन ने ऐसा प्रयोग किया था तो दुनिया में बड़ा विरोध हुआ था।

मतों के मूल्य बराबर नहीं

चुनाव क्षेत्र/कृष्ण प्रताप सिंह

दिलचस्प यह कि 2004 के आम चुनाव तक लक्षदीप देश का सबसे छोटा और बाहरी दिल्ली सबसे बड़ा संसदीय क्षेत्र था और दोनों के मतों के मूल्य में 86 गुने का अंतर था।इस असंतुलन के कई अनर्थ हैं। कुछ प्रत्यक्ष तो कुछ परोक्ष। लोक सभा के गठन में देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के मतदाताओं की हिस्सेदारी 16.49 प्रतिशत है, तो महाराष्ट्र के मतदाताओं की 9.69 प्रतिशत। इसी क्रम में पश्चिम बंगाल के मतदाताओं की भागीदारी 7.67, आंध्र प्रदेश व तेलंगाना के मतदाताओं की 7.66, बिहार के मतदाताओं की 7.62, तमिलनाडु के मतदाताओं की 6.66, मध्य प्रदेश के मतदाताओं की 5.84, कर्नाटक के मतदाताओं की 5.49, राजस्थान के मतदाताओं की 5.22 और गुजरात के मतदाताओं की 4.89 प्रतिशत भागीदारी है।

अगर आप मतदाता हैं और देश के दूसरे करोड़ों लोगों की तरह इस जोर-शोर से प्रचारित लोकतांत्रिक मिथ के शिकार हैं कि लोक सभा चुनाव में हर मतदाता के मत का मूल्य समान और नई लोक सभा के गठन में उसकी एक जैसी हिस्सेदारी या भूमिका होती है, तो अपनी यह गलतफहमी फौरन दूर कर लीजिए, क्योंकि यह मिथ सिर्फ और सिर्फ मिथ है। इस बात को एक उदाहरण से समझिए। अगर आप देश के सबसे छोटे लोक सभा क्षेत्र लक्षदीप के मतदाता हैं तो तेलंगाना स्थित सबसे बड़े क्षेत्र मलकाज गिरि के मतदाताओं के मुकाबले आपके मत का मूल्य कम से कम 63 गुना ज्यादा है, क्योंकि लक्षदीप में जहां केवल 49,922 मतदाता एक सांसद चुनकर लोक सभा में अपना एक मत पक्का कर लेते हैं, वहीं मलकाज गिरि के 31,83,325 मतदाताओं के पास भी लोक सभा में कुल मिलाकर एक ही मत है। मतों के मूल्य में यह असंतुलन तब है, जब इसे दूर करने के नाम पर ही 2009 के आम चुनाव से पहले लोक सभा क्षेत्रों का नया परिसीमन कराया गया था। चूंकि उक्त परिसीमन का आधार 2001 की जनगणना के आंकड़े थे, जो इस बीच बासी पड़ गये थे, फलस्वरूप असंतुलन कुछ कम तो हुआ, लेकिन पूरी तरह खत्म नहीं हो पाया। दिलचस्प यह कि 2004 के आम चुनाव तक लक्षदीप देश का सबसे छोटा और बाहरी दिल्ली सबसे बड़ा संसदीय क्षेत्र था और दोनों के मतों के मूल्य में 86 गुने का अंतर था।इस असंतुलन के कई अनर्थ हैं। कुछ प्रत्यक्ष तो कुछ परोक्ष। लोक सभा के गठन में देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के मतदाताओं की हिस्सेदारी 16.49 प्रतिशत है, तो महाराष्ट्र के मतदाताओं की 9.69 प्रतिशत। इसी क्रम में पश्चिम बंगाल के मतदाताओं की भागीदारी 7.67, आंध्र प्रदेश व तेलंगाना के मतदाताओं की 7.66, बिहार के मतदाताओं की 7.62, तमिलनाडु के मतदाताओं की 6.66, मध्य प्रदेश के मतदाताओं की 5.84, कर्नाटक के मतदाताओं की 5.49, राजस्थान के मतदाताओं की 5.22 और गुजरात के मतदाताओं की 4.89 प्रतिशत भागीदारी है। इस बात को गुणांकों के हिसाब से समझना चाहें तो दिल्ली के मतदाताओं का गुणांक जहां 0.83 है, वहीं अरु णाचल प्रदेश के मतदाताओं का गुणांक 4.38। गुणांक एक से कम होने का मतलब है कि लोक सभा में संबंधित राज्य के मतदाताओं का प्रतिनिधित्व राष्ट्रीय औसत से कम है और एक से ज्यादा होने का अर्थ यह कि उसे राष्ट्रीय औसत से ज्यादा प्रतिनिधित्व मिला हुआ है।2009 से पहले लोक सभा क्षेत्रों का परिसीमन 1970 में हुआ था। तब हर चुनाव क्षेत्र में औसतन 12.8 लाख वोटर थे। लेकिन तब भी इसका अर्थ यह नहीं था कि हर सीट पर वोटरों की संख्या इस औसत के आसपास ही होगी। अलबत्ता, उक्त परिसीमन के बाद विभिन्न राज्यों में लोक सभा क्षेत्रों की संख्या को स्थिर कर दिया गया था। तर्क यह था कि जनसंख्या या वोटरों की संख्या के आधार पर सीटों की संख्या में फेरबदल बर्र के छत्ते में हाथ डालने जैसा होगा। जो राज्य अपनी जनसंख्या के नियंतण्रमें आगे रहेंगे, उनकी सीटें कम करना एक तरह से उन्हें ''दंडित' करने जैसा हो जायेगा और इसका बहुत गलत संदेश जायेगा। नियमों के मुताबिक किसी भी लोक सभा क्षेत्र का फैलाव दो राज्यों में नहीं हो सकता, इस कारण भी कुछ राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के लोक सभा क्षेत्र मतदाताओं की संख्या के लिहाज से काफी छोटे हैं जबकि कई अन्य बहुत बड़े। परिसीमन में एक गड़बड़ यह भी हुई कि इसका ध्यान नहीं रखा गया कि कई बार राज्यों की जनसंख्या दूसरे राज्यों से आने वाले लोगों के कारण भी बढ़ती है। मसलन, दिल्ली, महाराष्ट्र और कर्नाटक में देश के सबसे बड़े तीन महानगर हैं और उनकी जनसंख्या बढ़ती जाने का सबसे बड़ा कारण अन्य राज्यों से आने वाला जनप्रवाह ही है। मतदाताओं की संख्या को आधार न बनाये जाने से हालत यह हो गई है कि कुछ राज्यों में मतदाताओं की संख्या के अनुपात में जितनी लोक सभा सीटें होनी चाहिए, नहीं हैं और इस कारण मतों के मूल्य की समानता स्थापित नहीं हो पा रही है। प्रत्येक लोक सभा सीट के मतदाताओं की संख्या के 2014 के राष्ट्रीय औसत 13.5 लाख को आधार बनाकर देश भर में लागू करें तो तमिलनाडु की कुल लोक सभा सीटें 39 से घटकर 31 हो जायेंगी, जबकि उत्तर प्रदेश की 80 सीटों से बढ़कर 88 होंगी। इसी तरह, महाराष्ट्र की सीटें 48 से बढ़ाकर 55 करनी होंगी, कर्नाटक की 25 से बढ़ाकर 28, गुजरात की 26 से बढ़ाकर 28, छत्तीसगढ़ की 11 से बढ़ाकर 12 और दिल्ली की सात से बढ़ाकर आठ, जबकि पश्चिम बंगाल की 42 से घटाकर 40, केरल की 20 से घटाकर 17, असम की 14 से घटाकर 13, जम्मू-कश्मीर की छह से घटाकर 5, हरियाणा की 10 से घटाकर नौ, हिमाचल की चार से घटाकर तीन और उत्तराखंड की पांच से घटाकर चार। अलबत्ता, पंजाब और मध्य प्रदेश की सीटें फिर भी यथावत बनी रहेंगी। देश के लोकतंत्र की अच्छी सेहत के लिए जरूरी है कि मतों के मूल्यों में यह असमानता जितनी जल्दी संभव हो, खत्म कर दिया जाये। लेकिन इसकी उम्मीद भी भला कैसे की जाये, जब समानता जैसे पवित्र मूल्य को संविधान की पोथी में उसके हाल पर छोड़ कर हम तेजी से असमानता की पोषक नीतियों की ओर बढ़ते जा रहे हैं।प्रसंगवश, अगर आप मतों के मूल्य में इस गड़बड़ की बाबत जानकर क्षुब्ध हो रहे हैं तो आपके लिए यह जानना भी जरूरी है कि देश के लोकतंत्र की यह विडम्बना इकलौती नहीं है। इधर, दि इरीटेटेड इंडियंस की ओर से एक मैसेज वायरल हो रहा है, जिसमें कहा गया है कि इस लोकतंत्र में राजनेता अपनी पसंद की दो सीटों से चुनाव लड़ सकते हैं, लेकिन मतदाता अपनी पसंद की दो सीटों तो क्या एक ही सीट की दो जगहों पर भी वोट नहीं दे सकते। जो मतदाता जेल में हैं, वे वोट नहीं दे सकते, लेकिन नेता जेल में रहकर भी मजे से चुनाव लड़ सकते हैं। इतना ही नहीं, अगर आप कभी किसी एक मामले में भी जेल हो आए हैं तो कोई सरकारी नौकरी नहीं पा सकते, लेकिन नेता कितनी बार भी जेल हो आये हों, बड़े पद को भी सुशोभित कर सकते हैं। बैंक की साधारण सी नौकरी के अभ्यर्थी से भी ग्रेजुएट होने की अपेक्षा की जाती है लेकिन नेता अंगूठाटेक होने पर भी देश के वित्तमंत्री बन सकते है। ऐसे में कोई तो बताए कि यह लोकतंत्र जनता का है या नेताओं का और क्या इसके सिस्टम को बदलने की जरूरत नहीं है? अगर है तो उसका मूहूर्त कब आयेगा?

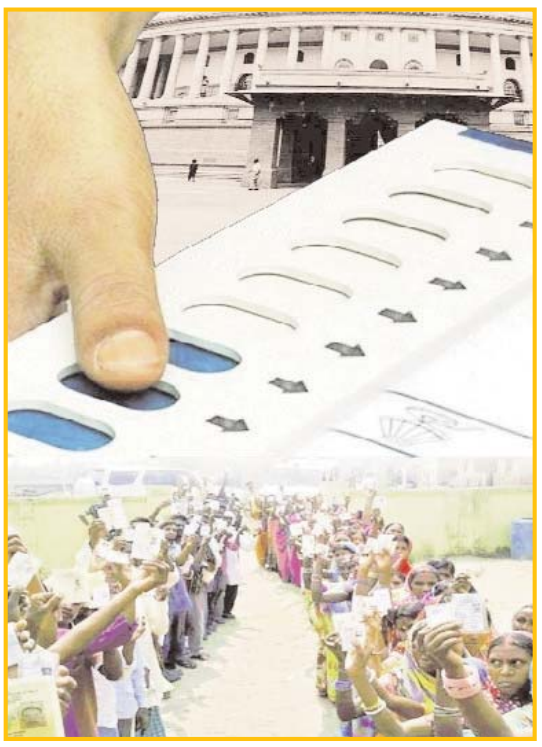

आज का राशीफल

मेष गृहोपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। कार्यक्षेत्र में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा। व्यर्थ के कार्यों में धन खर्च करने के योग हैं। राजनैतिक दिशा में किए गए प्रयास सफल होंगे।

वृषभ पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। रुपए पैसे के लेन-देन में सावधानी रखें। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें।

मिथुन आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे। किसी अभिन्न मित्र या रिश्तेदार से मिलाप की संभावना है।

कर्क बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। पारिवारिक जनों से पीड़ा मिलने के योग हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। प्रणय संबंध मधुर होंगे।

सिंह व्यावसायिक योजना सफल होगी। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। मकान सम्पत्ति व वाहन की दिशा में किया गया प्रयास सफल होगा।

कन्या रोजी रोजगार की दिशा में सफलता के योग हैं। सृजनात्मक कार्यों में हिस्सा लेना पड़ सकता है। खान-पान में संयम रखें। संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा। दूसरों से सहयोग लेने में सफल रहेंगे।

तुला शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा। अपनों का सहयोग मिलेगा। वाणी की सौम्यता आपको धन लाभ करायेगी। व्यर्थ की भागदौड़ होगी।

वृश्चिक व्यावसायिक योजना सफल होगी। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय न लें। आर्थिक उन्नति होगी। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। वाहन प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है।

धनु पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। व्यावसायिक योजना सफल होगी। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा।

मकर बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। नेत्र विकार की संभावना है। अनावश्यक व्यय का सामना करना पड़ेगा।

कुम्भ दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। खान-पान संयम रखें। आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। प्रणय संबंध प्रगाढ़ होंगे। विरोधियों का पराभव होगा।

मीन जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी। संतान के कारण चिंतित रहेंगे। आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय न लें। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे। रुका हुआ कार्य सम्पन्न होगा।

समस्या के समाधान को बने समग्र नीति

जानलेवा जाम/ पंकज चतुर्वेदी

पिछले दिनों मेरठ-देहरादून को दिल्ली से जोड़ने वाले हाईवे पर 14 किलोमीटर लंबा जाम लग गया। दिल्ली, मुंबई तो ठीक है लेकिन देश के सभी छह महानगर, सभी प्रदेशों की राजधानियों के साथ-साथ तीन लाख आबादी वाले 600 से ज्यादा शहरों-कस्बों शहरों में भी सड़क के आकार की तुलना में कई गुणा बढ़े वाहनों के दबाव के चलते जाम लगना आम बात है। अभी एक रिपोर्ट बताती है कि लखनऊ में हर दिन औसतन 11 मौतें होती हैं। यह बेहद गंभीर चेतावनी है कि आने वाले दशक में दुनिया में वायु प्रदूषण के शिकार सबसे ज्यादा लोग दिल्ली में होंगे। एक अंतर्राष्ट्रीय शोध रिपोर्ट में बताया गया है कि अगर प्रदूषण स्तर को काबू में नहीं किया गया तो साल 2025 तक दिल्ली में हर साल करीब 32,000 लोग ज़हरीली हवा के शिकार होकर असामयिक मौत के मुंह में जाएंगे। 'नेचर' पत्रिका में प्रकाशित ताजा शोध के मुताबिक दुनियाभर में 33 लाख लोग हर साल वायु प्रदूषण के शिकार होते हैं। यही नहीं, सड़कों में बेवजह घंटों फंसे लोग मानसिक रूप से भी बीमार हो रहे हैं व उसकी परिणति के रूप में आए रोज सड़कों पर 'रोड रेज' के तौर पर बहता खून दिखता है। वाहनों की बढ़ती भीड़ के चलते सड़कों पर थमी रफ्तार से लोगों की जेब में होता छेद व विदेशी मुद्रा व्यय कर मंगवाए गए ईंधन का अपव्यय होने से देश का नुकसान है सो अलग। सड़कों पर रास्ता न देने या हार्न बजाने या ऐसी ही गैरजरूरी बातों के लिए आए रोज खून बह रहा है। बीते दो दशकों के दौरान देश में ऑटोमोबाइल उद्योग ने बेहद तरक्की की है और साथ ही बेहतर सड़कों के जाल ने परिवहन को काफी बढ़ावा दिया है। विडंबना है कि हमारे यहां बीते इन्हीं सालों में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था की उपेक्षा हुई व निजी वाहनों को बढ़ावा दिया गया। रही-सही कसर बैंकों के आसान कर्ज ने पूरी कर दी और अब इंसान दो कदम पैदल चलने के बनिस्बत दुपहिया ईंधन वाहन लेने में संकोच नहीं करता है। असल में सड़कों पर वाहन दौड़ा रहे लोग इस खतरे से अनजान ही हैं कि उनके बढ़ते तनाव या चिकित्सा बिल के पीछे सड़क पर रफ्तार के मजे का उनका शौक भी जिम्मेदार है। शहर हों या हाइवे,जो मार्ग बनते समय इतना चौड़ा दिखता है, वही दो-तीन सालों में गली बन जाता है। महानगर से लेकर कस्बे तक और सुपर हाइवे से लेकर गांव की पक्की हो गई पगडंडी तक, सड़क पर मकान व दुकान खोलने व वहीं अपने वाहन या घर का जरूरी सामान रखना लोग अपना अधिकार समझते हैं। दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट कह चुका है कि लुटियन दिल्ली में कहीं भी वाहनों की सड़क पर पार्किंग गैरकानूनी है। जाहिर है कि जो सड़क वाहन चलने को बनाई गई उसके बड़े हिस्से में बाधा होगी तो यातायात प्रभावित होगा ही।

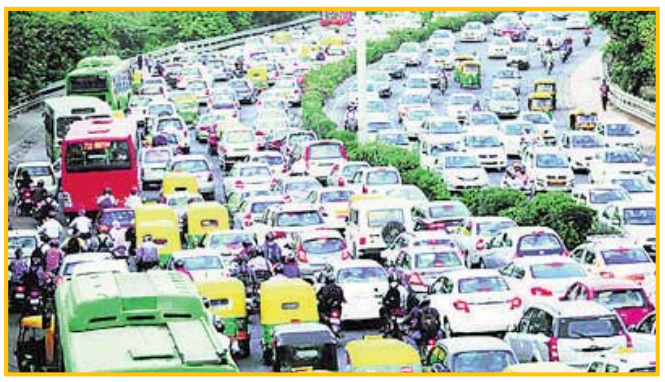

यातायात जाम का बड़ा कारण सड़कों का त्रुटिपूर्ण डिजाइन भी होता है, जिसके चलते थोड़ी-सी बारिश में वहां जलभराव या फिर मोड़ पर अचानक यातायात धीमा होने या फिर आए रोज उस पर गड्ढे बन जाते हैं। पूरे देश में सड़कों पर अवैध और ओवरलोड वाहनों पर तो जैसे अब कोई रोक है ही नहीं। पुराने स्कूटर को तीन पहिये लगाकर बच्चों को स्कूल पहुंचाने से लेकर मालवाहक बना लेने या फिर बामुश्किल एक टन माल ढोने की क्षमता वाले छोटे स्कूटर पर लोहे की बड़ी बॉडी कसवा कर अंधाधुंध माल भरने, तीन सवारी की क्षमता वाले टीएसआर में आठ सवारी व जीप में 25 तक सवारी लादने फिर सड़क पर अंधाधुंध चलने जैसी गैरकानूनी हरकतें कश्मीर से कन्याकुमारी तक स्थानीय पुलिस के लिए 'सोने की मुर्गी' बन गए हैं। इसके अलावा मिलावटी ईंधन, घटिया ऑटोपार्ट्स भी वाहनों से निकले धुएं के ज़हर को कई गुना कर रहे हैं। सनद रहे कि वाहन पर क्षमता से ज्यादा वजन होगा तो उससे निकलने वाला धुआं जानलेवा ही होगा। आमतौर पर स्कूलों का समय सुबह है और अब लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है, इसका परिणाम हर छोटे-बड़े शहर में सुबह से सड़कों पर जाम के रूप में दिखता है। ठीक यही हाल दफ्तरों के वक्त में होता है। नए मापदंड वाले वाहन यदि चालीस या उससे अधिक की स्पीड में चलते हैं तो उनसे बेहद कम प्रदूषण होता है। लेकिन यदि ये पहले गियर में रेंगते हैं तो इनसे सॉलिड पार्टिकल, सल्फर डाइआक्साइड व कार्बन मोनोआक्साइड बेहिसाब उत्सर्जित होता है। क्या स्कूलों के खुलने व बंद होने के समय में अंतर या बदलाव कर इस जाम के तनाव से मुक्ति नहीं पाई जा सकती है? कुछ कार्यालयों की बंदी का दिन शनिवार-रविवार की जगह अन्य दिन किया जा सकता है, जिसमें अस्पताल, बिजली, पानी के बिल जमा होने वाले काउंटर आदि हैं। यदि कार्यालयों में साप्ताहिक दो दिन के बंदी के दिन अलग-अलग किए जाएं तो हर दिन कम से कम 30 प्रतिशत कम भीड़ सड़क पर होगी। कुछ कार्यालयों का समय आठ या साढ़े आठ करने व उनके बंद होने का समय भी साढ़े चार या पांच होने से सड़क पर एकसाथ भीड़ होने से रोका जा सकेगा। बड़े-बड़े शहरों में जो कार्यालय जरूरी न हों, या राजधानियों में, जिनका मंत्रालयों से कोई सीधा ताल्लुक न हो, उन्हें सौ-दो सौ किलोमीटर दूर के शहरों में भेजना भी एक परिणामकारी कदम हो सकता है। इससे नए शहरों में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे व लोगों का दिल्ली की तरफ पलायन भी कम होगा।

भारतीय पेशेवरों के लिए ब्रिटेन का सिमटता दायरा

गौरीशंकर राजहंस पूर्व सांसद और पूर्व राजदूत

जब से राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका में विदेशियों के आने पर तरह-तरह की पाबंदियां लगानी शुरू की हैं, यूरोप के कई देशों में इसी तरह की आवाजें उठने लगी हैं। खासकर ब्रिटेन में इसकी मांग हो रही है, बल्कि टेरेसा मे सरकार भी इस मामले में सख्त रुख अपनाती हुई दिख रही है। हमारे लिए ब्रिटेन का मामला इसलिए ज्यादा महत्वपूर्ण है, क्योंकि वहां बड़ी संख्या में भारतीय पिछली सदी के मध्य से ही रहते आ रहे हैं। ब्रिटेन के मशहूर टेक्सटाइल शहर बर्मिंघम में 50 के दशक में ही हजारों भारतीय जा बसे थे। इनमें सिर्फ भारतीय ही नहीं पाकिस्तानी भी थे, जो साथ-साथ काम करते थे। दरअसल, अंग्रेजों ने अपने अनुभव से पाया था कि कपड़ा उद्योग में इस महाद्वीप के लोग बहुत निपुण हैं, इसलिए उनकी वहां मांग भी काफी थी। इसी वजह से ये लोग धीरे-धीरे ब्रिटेन में बड़ी संख्या में अपने रिश्तेदारों को भी ले गए, और बसते चले गए। ये सब अब वहां की आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। हालांकि, 60 के दशक में जब ब्रिटेन के टेक्सटाइल उद्योग में मंदी आई, तो प्रवासी भारतीयों को वापस भेजने की आवाजें उठने लगीं। उस वक्त यह दलील भी दी गई कि ये लोग ब्रिटेन के मूल नागरिकों की नौकरियां खा रहे हैं। जाहिर है, मूल निवासियों की इस तरह की मांगों और आंदोलनों से जो कटुता फैली, उससे कई बार तो दंगे तक की नौबत आ गई। हालांकि बावजूद इसके ज्यादातर भारतीय नहीं लौटे, क्योंकि उस समय भारत में भी रोजगार के अवसर बहुत ज्यादा नहीं थे। वैसे ज्यादातर भारतीय तो ब्रिटेन यही सोचकर गए थे कि अच्छी कमाई करके वे अपने देश लौट जाएंगे। इस बीच युगांडा से जिन भारतीयों को तानाशाह इदी अमीन ने बाहर निकाला, उनमें से भी ज्यादातर ब्रिटेन में जाकर बस गए। चूंकि युगांडा एक समय ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा हुआ करता था, इसलिए ब्रिटिश सरकार ने उन्हें वहां आकर बसने की इजाजत दे दी। आज की तारीख में ब्रिटेन में लगभग नौ लाख ऐसे भारतीय हैं, जिन्होंने वहीं पर जन्म लिया है। इस लिहाज से वे वहां के नागरिक ही हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि जब भी विदेश से आकर वहां कामकाज करने वालों के खिलाफ आवाजें उठती हैं, तो वे भी निशाने पर आ जाते हैं। हाल के वर्षों में बड़ी संख्या में भारतीय युवक, जिनमें से अधिकतर आईटी (सूचना प्रौद्योगिकी) में निपुण हैं, उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए ब्रिटेन गए। लेकिन अब ब्रिटिश सरकार ने एक नया नियम यह बना दिया है कि उन्हें दो वर्ष से ज्यादा ब्रिटेन में रहने का वीजा नहीं मिलेगा। पहले जो भारतीय कामकाज के लिए ब्रिटेन जाते थे, उन्हें यह छूट हासिल थी कि वे अपने परिवार के सदस्यों को भी ब्रिटेन ले जा सकते थे। ऐसे में, यदि पति कोई बड़ी नौकरी में लगा होता, तो पत्नी कोई छोटी-मोटी नौकरी कर लेती थी। लेकिन अब ब्रिटिश सरकार ने यह पाबंदी लगा दी है कि कोई व्यक्ति अपने साथ पत्नी या पति को नहीं ले जा सकेगा और हर हालत में उसे दो वर्ष में वापस भारत लौटना ही होगा। यह प्रतिबंध काफी कुछ वैसा ही है, जैसा कि इन दिनों अमेरिका में प्रोफेशनल्स को दिए जाने वाले एच1बी वीजा के मामले में हो रहा है। साफ है, ये भारतीय पेशेवरों की परेशानी बढ़ाने वाला कदम है। पिछले अनेक वर्षों से यह देखा गया है कि ब्रिटेन में डॉक्टरों की बहुत कमी है। इसलिए भारतीय मूल के जो डॉक्टर ब्रिटेन जाते हैं, उन्हें दो वर्ष से अधिक का वीजा मिल जाता है। तकरीबन यही स्थिति भारतीय नर्सों की भी रही है।

लेकिन जब से पाबंदियां बढ़ी हैं, ऐसे पेशेवर भी कनाडा और ऑस्ट्रेलिया को प्राथमिकता देने लगे हैं। ब्रिटेन में आमतौर पर दो कारणों से भारतीयों को नौकरी में प्राथमिकता दी जाती रही है। एक तो वे आसानी से अंग्रेजी बोल-समझ लेते हैं, और दूसरे वे कम तनख्वाह पर भी काम कर लेते हैं। लेकिन अब जब ब्रिटेन पर आर्थिक संकट के बादल मंडराने लगे हैं, तो ये सारे तर्क बेमानी हो रहे हैं। ब्रिटेन में भारतीय पेशेवरों का स्वागत नहीं हो रहा, यह चिंता का विषय तो है, लेकिन उतना बड़ा विषय भी नहीं है, जितना यह कि इन बातों से वहां के समाज में जो कड़वाहट पैदा हो रही है, उसका असर उन लोगों पर भी पड़ने लगा है, जो भले ही भारतीय मूल के हैं, लेकिन अब वे वहां के ही नागरिक हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मुहांसे हो सकते है
तनाव का कारण

चेहरा इंसान की पहचान होता है और सुंदर त्वचा चेहरे के सौंदर्य को कई गुना बढ़ा देती है। चमकीली और मुलायम त्वचा तो हर कोई चाहता है, लेकिन अक्सर उम्र बढ़ने के साथ या खराब जीवनशैली के कारण यह अपना आकर्षण खो देती है। त्वचा की कई समस्याएं हैं, लेकिन मुहांसे सबसे ज्यादा लोगों को परेशान करते हैं। त्वचा को प्रभावित करने में मौसम के अलावा तनाव भी मुख्य भूमिका निभाता है। शोध में पाया गया कि आहार और साफ-सफाई के अलावा तनाव भी त्वचा को प्रभावित करता है। कई लोग जो तनावग्रस्त होते हैं उनके मुहांसे और गम्भीर हो जाते हैं।

शोधकर्ताओं ने पाया कि जिन किशोरों में परीक्षा का तनाव होता है, उनमें मुहांसे उभरने या उभरे हुए मुहांसे और गम्भीर होने की सम्भावना अधिक होती है। नई दिल्ली स्थित तुलसी हेल्थ केयर के मनोचिकित्सक डॉ. गौरव गुप्ता का कहना है कि परीक्षा के वक्त किशोरों को चेहरे पर मुहांसे भी उभरने के साथ पक भी जाते है। तनाव से खाज और अन्य त्वचा संबंधी समस्याएं हो जाती हैं। देखा जाए तो त्वचा हमारे मन की स्थिति का आईना होता है। किशोरावस्था में मुंहासे होने का कारण शरीर में होने वाले हार्मोंस से संबधित बदलाव होते हैं। इसके अलावा इस उम्र में बच्चे तनाव का शिकार भी जल्दी होते हैं। पीयर प्रेशर और हमेशा सुंदर दिखने का दबाव उन पर रहता है।

यही वजह है कि टीनएजर मुंहासे होने पर गहरे तनाव में घिर जाते हैं। ऐसी स्थिति में माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों पर इससे होने वाले मनोवैज्ञानिक प्रभावों को समझें और जानें। जो माता-पिता बच्चों की इस समस्या को उचित मार्गदर्शन से सही कर सकते हैं उनके बच्चे इस समस्या से उबर सकते हैं। मुंहासे जवानी में भी हो सकते हैं। लगभग 50 प्रतिशत जवान महिलाएं और 25 प्रतिशत पुरुषों को जवानी में यह समस्या निरंतर जकड़े रहती है। कई महिलाएं तो इनके कारण डिप्रेशन के शिकार हो जाती हैं। इन मुंहासे के होने के कई कारण हो सकते हैं। जैसे वातावरण का प्रभाव, शारीरिक और हारमोन्स से संबंधित होने वाले बदलाव वगैरह। जिस समय व्यक्ति तनावग्रस्त होता है तो शरीर में कोर्टिसोल हार्मोंस का स्राव बढ़ जाता है जिसके कारण शरीर में त्वचा की ग्रंथियों से सीवम नामक हारमोन का स्राव ज्यादा होने लगता है जिसके कारण मुंहासे होते हैं। इसके अलावा यह ब्लैक हेड्स और व्हाइट हेड्स होने का भी कारण हो सकता है। अत- तनाव को बेहतर तरीके से हैंडल करना चाहिए। तनाव का प्रभाव शरीर पर न पड़े इसके लिए खुश रहें और पूरा आराम करें। पर्याप्त आराम, एक्सरसाइज और सकारात्मक नजरिए से तनाव पैदा होने वाली तमाम स्थितियों से काफी हद तक बचा जा सकता है।

मुंहासों की समस्या यदि ज्यादा गंभीर होने लगे तो इसके लिए डॉक्टर से परामर्श करें। अपने भोजन और लाइफ स्टाइल में बदलाव करें। रिफाइंड काब्रोहाइड्रेट युक्त आहार व कैफीन मात्रा में लें। लो-फैट डाइट लें और पर्याप्त मात्रा में पानी पीएं। हालांकि मुंहासे की समस्या को देखने का हर व्यक्ति का अपना नजरिया होता है। कुछ लोगों को यह एक बड़ी गंभीर समस्या लगती है उन्हें लगता है कि इससे उनका चेहरा भद्दा लगता है। इन्हें देखकर उन्हें गुस्सा आता है और वे तनावग्रस्त हो जाते है। स्त्री, पुरुष, किसी भी आयु वर्ग के, किसी भी देश के व्यक्ति मुंहासों की जद में आ सकते है।

दिन में कम से कम चेहरे को तीन बार सादे पानी से धोएं, लेकिन ध्यान रहे साबुन या फेसवॉश का इस्तेमाल दिन में एक बार ही करें, क्योंकि इनके ज्यादा प्रयोग से त्वचा को नुकसान पहुंचता है और वह रूखी हो जाती है।

खास टिप्स

पिंपल्स जितने अधिक समय तक रहेंगे, दाग उतने ही गहरे होंगे, इसलिए तुरंत डॉक्टर को दिखाएं।

अक्सर देखा जाता है कि जिन लोगों में मुहांसों की समस्या होती है, उनके शरीर में इंसुलिन का स्राव औसत से अधिक होता है। इससे बचने के लिए अपने भोजन में कार्बोहाइड्रेट और डेयरी उत्पादों का सेवन कम करें।

कुछ अनुसंधानों में यह बात सामने आई है कि अधिक मात्रा में दूध और दुग्ध उत्पादों का सेवन करने से भी मुहांसों की समस्या हो जाती है।

चेहरे को जोर-जोर से न रगड़ें। मुहांसों को दबाएं या फोड़े नहीं। ज्यादा तैलीय, मसालेदार भोजन न खाएं।

चेहरे की त्वचा को साफ रखें। चेहरे पर ऑयल फ्री प्रोडक्ट लगाएं।

तनाव न लें, क्योंकि इससे हार्मोन्स का संतुलन गड़बड़ा जाता है, जो मुहांसों का कारण बन जाता है।

ब्लीच, फेशियल या स्टीम न लें। मेकअप का प्रयोग भी न करें, इससे मुहांसे जल्दी ठीक हो जाएंगे।

धूप में हमेशा सनस्क्रीन लगाएं, यह न सिर्फ त्वचा की रक्षा करता है, बल्कि स्किन कैंसर के खतरे को भी कम करता है। इससे पिग्मेंटेशन भी कम होता है और झुर्रियां भी जल्दी नहीं पड़तीं।

धूम्रपान करने से त्वचा के इलास्टिन और कोलेजन नष्ट हो जाते हैं, जिससे इसका मुलायमपन खत्म हो जाता है।

तनाव न लें, क्योंकि तनाव से त्वचा को नुकसान पहुंचता है और यह अति संवेदनशील हो जाती है। रोजाना चार-पांच लीटर पानी पिएं।

दिन में दो बार किसी अच्छे फेसवॉश या माइल्ड साबुन से चेहरा धोएं। रात को नाइट क्रीम लगाएं। यह त्वचा को पोषण प्रदान करती है।

व्यायाम और योग करें, इससे रक्त का संचरण बढ़ता है, तनाव कम होता है, जिससे त्वचा की कई समस्याएं दूर हो जाती हैं।

त्वचा की रंगत और स्वास्थ्य के लिए जरूरी है कि भोजन में हरी पत्तेदार सब्जियों, मौसमी फलों, मेवों और दही को शामिल करें और जंक फूड, सॉफ्ट ड्रिंक से बचें।

ग्रीन टी का सेवन करें, क्योंकि इसमें एंटी ऑक्सीडेंट होते हैं, जो सुंदर त्वचा के लिए वरदान होते हैं।

त्वचा को पानी की आवश्यकता होती है। ढ़ेर सारा पानी पिएं, इससे त्वचा साफ, मुलायम और बेदाग बनेगी।

अंदर से तरोताजा रहने के लिए खूब सारा पानी पीएं। इससे शरीर से गंदगी बाहर निकलती है और बॉडी में नए सेल्स बनते हैं। शरीर की तरह स्किन को चकमदार और स्वस्थ बनाए रखने के लिए पानी की बेहद जरूरत है। रात को सोने से पहले कम से कम 1-2 गिलास पानी पिएं। ये आपकी स्किन में मौजूद नुकसानदेह टॉक्सिन्स को निकालने में मदद करता है। जितना हो सकें लिब्डि लें। पानी की जगह हर दिन दो गिलास जूस अवश्य लेना चाहिये। इससे स्किन में पोषण पहुंचेगा और स्किन ग्लो करेगी।

कहीं मुश्किल में न डाल दें ये
सेहतमंद आदतें

स्वस्थ रहने के लिए हम हर उस बात का अनुसरण करने के लिए तैयार रहते हैं, जो सेहतमंद रखने का दावा करती हैं. मगर कुछ अच्छी बातें भी हमारे स्वास्थ को नुकसान पहुंचा सकती हैं. सेहत को लेकर सचेत रहना अच्छी बात है, लेकिन आपको इस बात के प्रति भी सचेत रहना चाहिए कि अपनी सेहत के लिए आप जिन आदतों को फायदेमंद मानती हैं, वे वाकई में फायदेमंद हैं या नहीं. क्योंकि ऐसा कई बार देखने में आया है कि हम अपने मन में सेहत, खाने-पीने की आदतों, साफ-सफाई को लेकर काफी सतर्कता बरतते हैं, लेकिन इस बात से बेपरवाह रहते हैं कि हमारी ये आदतें सेहत के लिए फायदेमंद न होकर नुकसानदेह साबित हो सकती हैं. हम आपको बता रहे हैं कि वे सेहतमंद आदतें कौन सी हैं, जो आपके लिए घाटे का सौदा साबित हो सकती हैं.

हर बार खाने के बाद ब्रश करना

कई लोगों को लगता है कि हर बार खाना खाने के बाद ब्रश करना आपके दांतों को कीटाणु-मुक्त और दांतों को मोतियों-सा दमकता हुआ बनाये रखने में मददगार होता है. लेकिन हकीकत यह है कि यह आपके दांतों पर से सुरक्षाकारी एनामेल को घिस सकता है और इससे आपको दांतों में सेंसिटिविटी की समस्या पैदा हो सकती है. इसलिए अपनी मां की हर दिन दो बार ब्रश करने की सलाह को याद कीजिए. आपके लिए वही फायदेमंद है. खाना खाने के बाद हर बार ब्रश करने की बजाय अच्छी तरह से कुल्ला करना आपके लिए ज्यादा उपयोगी है.

ठीक नहीं हैंड सैनिटाइजर का बार-बार इस्तेमाल

क्या आप बाहर निकलने के बाद कुछ भी छूने, किसी चीज को पकड़ने के बाद बार-बार अपने हाथों में सैनिटाइजर मलती हैं? तो आप सतर्क हो जाइए. यह आदत आपको नुकसान पहुंचा सकती है.यह सही है कि हैंड सैनिटाइजर हाथों को साफ करने का सुविधाजनक तरीका है, लेकिन इस बात का ख्याल रखना भी जरूरी है कि इसका समझदारी से उपयोग किया जाये. अमेरिका में किये गये एक शोध के मुताबिक ज्यादातर सैनिटाइजर में ट्राइक्लोसान नामक एक केमिकल होता है, जिसे हाथ की त्वचा तुरंत सोख लेती है. अगर यह रक्त संचार में शामिल हो जाये, तो यह मांसपेशी को-ऑर्डिनेशन के लिए जरूरी सेल-कम्युनिकेशन को बाधित करता है. इसका लंबे समय तक ज्यादा इस्तेमाल त्वचा को सूखा बनाने, बांझपन और हृदय के रोग को न्योता दे सकता है.इसलिए अगर आपको हाथ धोने की जरूरत महसूस हो रही है, तो इंतजार कीजिए और मौका मिलते ही साबुन और पानी से ही अपने हाथों को धोइए.

क्या आप अपने कॉस्मेटिक्स को बार-बार बदलती हैं?

अगर आप विज्ञापनों के प्रभाव में अपने कॉस्मेटिक्स को बार-बार बदलती हैं, तो इस आदत को बदल दीजिए. त्वचा विशेषज्ञों का कहना है कि इनसानी त्वचा का पीएच स्तर 55 होता है.अलग-अलग कंपनियों के कॉस्मेटिक्स के पीएच मान अलग-अलग होते हैं.जिन लोगों की त्वचा संवेदनशील होती है, उनके लिए अलग-अलग पीएच मानकों के प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल नकुसानदेह साबित हो सकता है. इससे आपकी त्वचा लाल पड़ सकती है. इसमें जलन या चकत्ते आने की शिकायत आ सकती है. इसलिए सिर्फ भरोसेमंद ब्रांड्स के कॉस्मेटिक्स का इस्तेमाल करें और इस्तेमाल से पहले सबके पीएच मानकों को जरूर पढ़ लें.

हर बार बोतल बंद पानी नहीं

कई लोगों को लगता है कि बोतलबंद पानी आपको रोगों से दूर रखने में मददगार होता है. लेकिन ध्यान रखिए. बोतलबंद पानी प्रोसेस्ड पानी होता है, जिसमें खनिज तत्व मौजूद नहीं रहते हैं. लंबे समय तक इसका इस्तेमाल करने से आपके शरीर में मैग्नीशियम, कैल्शियम, पोटैशियम, सिलिका, सल्फेट जैसे खनिजों की कमी हो सकती है. यह आपके लिए नुकसानदायक है, क्योंकि ये खनिज आपके शरीर में कई काम करते हैं.ये तत्व आपको ऊर्जा मुहैया कराने के साथ-साथ कोशिका और मांसपेशियों की मरम्मत भी करते हैं.

फ्लिप फ्लॉप और पांव

क्या आपको लगता है कि हील वाली चप्पल आपके पांवों को नुकसान पहुंचाती हैं, इसलिए आपको चपटे सोल वाली चप्पल का इस्तेमाल करना चाहिए? लेकिन यह ख्याल आपके लिए वास्तव में नुकसानदायक साबित हो सकता है.क्योंकि आर्क नहीं होने के कारण फ्लिप फ्लॉप (चपटे सोल वाली चप्पल) आपके पांवों को कोई सपोर्ट नहीं दे पातीं. चलते वक्त चपटे स्लिपर को कंट्रोल करने के लिए अंगूठों को लगातार चप्पल पर ग्रिप बनाना पड़ता है, ताकि वह पांव से फिसल न जाये.इससे पांवों का नैचुरल लिफ्ट ऑफ और पांव रखना गड़बड़ा जाता है. इससे पांवों के तलवे में दिक्कत आ सकती है. अगर आपको अपने पांवों का ख्याल है, तो कोशिश रहे कि आप फ्लिप फ्लॉप कम ही पहनें.

प्रेग्नेंसी के दौरान महिलाएं खान-पान का रखें
विशेष ध्यान

महिलाओं को गर्भधारण के बाद अपने खाने-पीने की चीजों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है। इस समय उन्हें सामान्य से ज्यादा ऊर्जा और कैलोरी की आवश्यकता होती है। जच्चा और बच्चा दोनों को सही मात्रा में कैलोरी मिले इसके लिए जरूरी है कि गर्भवती महिलाएं अपने खाने पर विशेष ध्यान दें। प्रेग्नेंसी में फल और जूस बहुत फायदेमंद होते हैं। फलों से जहां प्रोटीन, कैल्शियम और सिलिकॉन मिलता है, वहीं जूस पीने से शरीर में ताजगी बनी रहती है। लेकिन जूस पीते वक्त ये ध्यान रखें कि जूस ताजे फलों का बना हो। डिब्बा बंद जूस पीने से बचें। प्रेग्नेंट महिला को ब्रेकफास्ट में दूध और डेयरी प्रोडेक्ट का इस्तेमाल भी करना चाहिए।

प्रेग्नेंट महिलाएं अपने नाश्ते में अंडा या ऑमलेट भी ले सकती हैं। पालक के साथ ऑमलेट लेने से भी फायदा होता है। इससे 41 कैलोरी के साथ आयरन, फोलिक एसिड और कैल्शियम भी मिलता है। साबुत अनाज जैसे दलिया, कॉर्न, दालें, ब्राउन राइस भी प्रेग्नेंसी में काफी लाभप्रद रहते हैं। इसमें विटामिन, प्रोटीन, कैल्शियम और फाइबर होता है, जो प्रेग्नेंट महिलाओं के लिए जरूरी है। प्रेग्नेंसी के दौरान पानी खूब पीना चाहिए। फिल्टर्ड पानी का ही उपयोग करें। फिल्टर्ड पानी ना हो तो इसे उबाल लें। उबालने से पानी साफ हो जाता है। जब घर से बाहर हो तब अच्छे ब्रांड की बोतल का ही पानी पिएं।

कानों को साफ करना हो सकता है
खतरनाक

कुछ लोगों को लगातार कॉटन स्वैब से कान साफ करने की आदत होती है। वे लगातार कान की वैक्स और गंदगी साफ करते रहते हैं। हालांकि इसके कई दुष्प्रभाव हो सकते हैं। इससे न केवल कान के पर्दे को

नुकसान पहुंचता है, बल्कि कई अन्य संभावित नुकसानों से भी इनकार नहीं किया जा सकता। अपने कान साफ करने के लिए लोग कई अनदेखी चीजों का इस्तेमाल करते हैं। यह बात समझनी बहुत जरूरी है कि कान के भीतर वैक्स और गंदगी को साफ करने के लिए कुछ भी इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। ऐसा खतरनाक है और इससे आपके सुनने की क्षमता भी खत्म हो सकती है।

क्या है कॅटन स्वैब

ईयर कैनाल में मौजूद कोशिकाएं कैरुमन का निर्माण करती हैं, जिसे सामान्य भाषा में ईयर वैक्स कहा जाता है। किसी डाक्टर की मदद लेने की बजाय कुछ लोग कॉटन स्वैब से यह वैक्स हटाने का आसान रास्ता अपनाते हैं। लोगों को लगता है कि डाक्टर के पास जाकर समय और पैसे बर्बाद करने से अच्छा है कि इस वैक्स को खुद ही निकाल लिया जाए। लेकिन इससे उन्हें फायदा कम नुकसान ज्यादा होता है।

पर्दे को नुकसान

रुई का फोहा आसानी से कान के पर्दे तक पहुंच जाता है। कान का पर्दा बहुत संवेदनशील होता है और स्वैब के मामूली दबाव से भी वह क्षतिग्रस्त हो सकता है।

तो क्या करें

तो ऐसे में सवाल उठता है कि हमें वाकई अपने कान साफ करने की जरूरत होती है। कान का बाहरी हिस्सा जो नजर आता है उसे कभी कभार साफ किया जाना चाहिए। इस काम को आप थोड़े से साबुन, पानी और तौलिए से भी कर सकते हैं।

सुनने की क्षमता जा सकती है

ज्यादातर मामलों में इयर कैनाल को साफ करने की जरूरत नहीं होती। नहाते या शॉवर के समय हमारे कान में इतना पानी चला जाता है कि जमी हुई वैक्स अपने आप ही ढीली हो जाती है।

डॉक्टरी मदद की दरकार

ऐसे लोग जिनके कान में बहुत ज्यादा वैक्स होती है, उन्हें डाक्टरी सहायता की जरूरत होती है। डाक्टर पानी में थोड़ा सा पेरोक्साइड मिलाकर उसे कान में इंजेक्ट कर आसानी से वैक्स को बाहर निकाल सकते हैं। इस प्रक्रिया में दर्द बिलकुल नहीं होता। कान में जमी वैक्स निकालने के लिए यह तरीका बेहद प्रभावशाली है। अगर यह समस्या काफी ज्यादा रहती है तो मरीज डाक्टर से यह प्रक्रिया समझ कर इसे घर पर ही कर सकता है। अगर आपके कान में वैक्स या गंदगी जमा हो रही है तो आप डाक्टर की सहायता ले सकते हैं। आप उनसे सही कान साफ करने का तरीका पूछ सकते हैं।

मामूली उपायों से बच सकती है 50 प्रतिशत
दिल के मरीजों की जान

सही समय पर अस्पताल नहीं पहुंच पाने के कारण देश में दिल का दौरा पडने के बाद 50 प्रतिशत मरीजों की जान चली जाती है जबकि प्राथमिक उपचार की मामूली तकनीक से उनकी जान बचाई जा सकती है।

दिल की बीमारियों के कारण देश में हर वर्ष 34 लाख लोगों की मौत हो जाती है और एक लाख बीस हजार बच्चे जन्मजात दिल की बीमारियों के से ग्रसित होते हैं। अकेले जम्मू में 30 से अधिक उम्र के 10 प्रतिशत से 14 प्रतिशत लोग दिल की बीमारियों से पीड़ित हैं। विशेषज्ञों का कहना था कि इनमें से बहुत से मरीजों की समस्याओं का इलाज संभव होता है और उन्हें मौत के मुंह में जाने से रोका जा सकता है।

उन्होंने बताया कि इस तकनीक का प्रशिक्षण हर व्यक्ति को मिले, यह मौजूदा समय की मांग है। उन्होंने बताया कि सीपीआर तकनीक सिर्फ 5 मिनट में सीखी जा सकती है जिसकी मदद से हृदयाघात से पीड़ित व्यक्ति को दस मिनट के भीतर बचाया जा सकता है।

ट्रेन में बिना टिकट यात्रा कर रहे यात्रियों से वसूले 11.15 करोड़

सूरत। वेस्टर्न रेलवे द्वारा फरवरी महीने में ट्रेन में बिना टिकट यात्रा करने वाले 2.36 लाख यात्रियों से 11.15 करोड़ रुपए का दंड वसूला गया। पिछले वर्ष की अपेक्षा यह राशि 1.78 फीसदी अधिक है। जबकि रेलवे स्टेशन से 318 भिक्षुकों को तथा रेलवे स्टेशन पर बिना लाइसेंस खाने-पीने की बिक्री करने वाले 428 लोगों से दंड वसूला गया साथ ही 90 लोगों को जेल भेजा गया।

पश्चिम रेलवे के मु य अधिकारी रविन्द्र भाकरे ने बताया कि, 2019 के फरवरी महीने में टिकट के कालाबाजारी और असामाजिक तत्वों के खिलाफ कुल 246 मामले दर्ज किए गए। जिनमें से 257 को पकड़ा गया और उनके खिलाफ कोर्ट में मामला चलाकर दंड वसूला गया। जबकि 12 वर्ष से अधिक आयु के 44 छात्रों को महिला कोच में यात्रा करते हुए पकड़ा गया।

भाजपाध्यक्ष अमित शाह 30 मार्च को गांधीनगर से पर्चा भरेंगे

अहमदाबाद। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और गांधीनगर संसदीय सीट से उम्मीदवार अमित शाह 30 मार्च को नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। अमित शाह की नामांकन प्रक्रिया के दौरान भाजपा की गांधीनगर में शक्ति प्रदर्शन की तैयारी है और दौरान राज्य के सभी 25 लोकसभा प्रत्याशी गांधीनगर में मौजूद रहेंगे। इतना ही गुजरातभर से करीब 10000 जितने भाजपा कार्यकर्ता भी शक्ति प्रदर्शन में शामिल होंगे। भव्य रोड शो, पदयात्रा और रंगारंग कार्यक्रम के साथ भाजपा अमित शाह की नामांकन प्रक्रिया ऐतिहासिक बनाने की कोशिश करेगी। गांधीनगर से अमित शाह के नाम के ऐलान के साथ ही गुजरात भाजपा ने उनकी नामांकन प्रक्रिया को भव्य बनाने का पहले से ही आयोजन कर लिया था।

पुलिस ने एक ही दिन में 50 बुटलेगरों को किया गिरफ्तार

सूरत। लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा, कांग्रेस समेत राजनीतिक पक्षों द्वारा अपने उम्मीदवारों की सूची घोषित की जा रही है। वहीं दूसरी तरफ जिला प्रशासन के साथ पुलिस द्वारा भी शहर में शराब का विक्रय न हो उसके लिए कड़क अमल शुरू किया गया हो इसा प्रतित हो रहा है। गत रोज एक ही दिन में शहर के अलग-अलग विस्तारों से देशी और अंग्रेजी शराब के साथ महिला समेत 52 बुटलेगरों को गिरफ्तार किया गया जिससे बुटलेगरों में सन्नाटा फैल गया है।

शहर में बुटलेगरों पर शिकंजा कसने के लिए पुलिस ने कार्यवाही शुरू की है। जिसके अनुसार क्राइम ब्रान्च ने गत रोज एक ही दिन में 52 बुटलेगरों को गिरफ्तार किया है। इतना ही नहीं पुलिस ने इन बुटलेगरों के पास से देशी एवं अंग्रेजी शराब बरामद कर सभी को जेल भेजा। क्राइम ब्रांच की जानकारी के अनुसार गत रोज पूरे दिन के दौरान स्टाफ के लोगों ने रांदेर ताडवाडी, मोराभागल, बमरोली गाम, वडोदगाम हलपतिवास, भेस्तान, कतारगाम, महीधरपुरा, खटोदरा आदि विस्तारों में बुटलेगरों के खिलाफ कार्यवाही की गई। इसके अलावा पनासगाम, गोडादरा, पुणा, कापोद्रा, वराछा, अठवा सचिन जीआईडीसी आदि विस्तारों से भी शराब बरामद कर बुटलेगरों को गिरफ्तार किया गया।

अहमदाबाद शहर की पुरानी हाईकोर्ट में जहरीली शराब केस के आरोपी को कोर्ट में उपस्थित किया गया। इस केस में सुनवाई पर सभी की निगाहे थी।

दूसरे उम्मीदवारों के नाम एक-दो दिन में एलान होंगे

कांग्रेस द्वारा सात उम्मीदवारों के नाम का एलान किया गया

उम्मीदवारो में जगदीश ठाकोर, पूजा वंश, कगथरा, ललित वसोया, तुषार चौधरी, वीके खांट, जीतू चौधरी शामिल

अहमदाबाद । एक तरफ गुजरात में लोकसभा सीट के अधिकतर उम्मीदवारों के नाम एलान करके भाजपा अपनी निर्धारित चुनाव रणनीति के अनुसार आगे बढ़ रहा है तब कांग्रेस गुरुवार को नामांकन फॉर्म भरने की शुरूआत हुई है तब तक इसके उम्मीदवारों की सूची जारी नहीं होने से गुजरात कांग्रेस में भारी उत्सुकता और इंतजार का माहौल बन गया तब गुरुवार को शाम को दिल्ली में कांग्रेस हाइकमान के नेतृत्व के तहत कांग्रेस के राष्ट्रीय दिग्गज नेताओं की बैठक में लोकसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस के और कई उम्मीदवार के नाम एलान किए गए थे। जिसमें गुजरात की लोकसभा सीटों के लिए कांग्रेस की तरफ से और सात उम्मीदवारों के नाम एलान किए गए थे। जिसमें पाटण से जगदीश ठाकोर, जूनागढ़ पूजा वंश, राजकोट से कगथरा, पोरबंदर ललित वसोया, बारडोली तुषार चौधरी, पंचमहाल से वी.के. खांट और वलसाड जीतू चौधरी भी शामिल है। गुजरात के और सात उम्मीदवारों के नाम एलान होने पर कांग्रेस में काफी चर्चा और उत्तेजना का माहौल छा गया। हालांकि, अभी बाकी के सीटों के उम्मीदवारों के नाम पर विचार-विमर्श किया जा रहा है और यह भी एक-दो दिन में घोषणा की जाए ऐसी संभावना है। विशेष करके अहमदाबाद पर्व, गांधीनगर, जामनगर, बनासकांठा और साबरकांठा जैसी महत्व की सीटों को लेकर कांग्रेस में भारी खींचतान चल रही है, जिसे लेकर कांग्रेसी हाइकमान भी काफी विचार करके निर्णय लिया जाता है। एक तरफ, हार्दिक पटेल, अल्पेश ठाकोर, महत्वाकांक्षी कई विधायक, पेराशूट उम्मीदवार, भाजपा की सूची में से पैदा हुए नए समीकरण आदि मामलों से प्रदेश हाइकमान विचाराधीन बन गया है है दूसरी तरफ, दिल्ली हाइकमान समक्ष प्रदेश अध्यक्ष और विधानसभा के विपक्ष के नेता की भागदौड़ बढ़ गई है फिर भी जिस प्रकार से निश्चित परिणाम आना चाहिए ऐसी व्यवस्था करना चाहिए। इसमें अहमदाबाद पूर्व, गांधीनगर, जामनगर, बनासकांठा, साबरकांठा जैसी कई सीट में गतिरोध होने से कांग्रेस की परेशानी बढ़ रही है। गुरुवार शाम को दिल्ली में कांग्रेस हाइकमान के नेतृत्व के तहत राष्ट्रीय दिग्गज नेताओं की महत्व की बैठक हुई थी, जिसमें गुजरात सहित अन्य राज्यों में लोकसभा सीट के लिए और उम्मीदवारों के एलान किए गए थे। जिसमें गुजरात की लोकसभा सीटों के लिए कांग्रेस के और सात उम्मीदवारों में पाटण से जगदीश ठाकोर, जूनागढ़ पूजा वंश, राजकोट से कगथरा, पोरबंदर ललित वसोया, बारडोली तुषार चौधरी, पंचमहाल खांट और वलसाड जीतू चौधरी के नाम एलान किए गए थे, अभी बाकी के सीटों के उम्मीदवारों के नाम पर विचार-विमर्श किया जा रहा है और यह भी एक-दो दिन में घोषणा कर दी जाए ऐसी संभावना है। ४ अप्रैल से नामांकन फॉर्म भरने की अंतिम तारीख होने से कांग्रेस उम्मीदवारों की आधिकारिक घोषणा की प्रक्रिया दो-चार दिन में पूरा कर देना चाहती है यह साफ संकेत गुजरात कांग्रेस के नेताओं ने दिया था।

टिकट मिलने से नाउम्मीद पूर्व विधायक ने कांग्रेस छोड़ी

अहमदाबाद। गुजरात भाजपा के पूर्व विधायक शामजी चौहान ने गुरुवार को कांग्रेस छोड़ दी और दावा किया कि पार्टी ने सुंदरनगर से लोकसभा सीट के लिए टिकट देने का वादा किया था लेकिन टिकट नहीं देकर उनके साथ धोखा किया गया। कांग्रेस ने अभी तक सुंदरनगर से उम्मीदवार की घोषणा नहीं की है। बहरहाल, कांग्रेस के स्थानीय विधायक सोमा पटेल और रित्विक मकवाना को उम्मीदवारों की दौड़ में सबसे आगे माना जा रहा है। चौहान ने टिकट मिलने की उम्मीद को नहीं देखते हुए पार्टी छोड़ दी। वह सुंदरनगर जिले के चोटिला से २०१२ से २०१७ के बीच भाजपा के विधायक रहे। पिछले विधानसभा चुनावों में भाजपा ने उन्हें टिकट नहीं दिया था जिसके बाद अगस्त २०१८ में वह कांग्रेस में शामिल हो गए थे।

नामांकन फॉर्म स्वीकार करने का प्रारंभ

दस्क्रोई मत क्षेत्र में ज्यादा और दरियापुर में कम मतदान बूथ

जिला शासकों ने संबंधित विधानसभा मत क्षेत्र के रिर्टनिंग ऑफिसर को ईवीएम-वीवीपेट का वितरण शुरू किया

अहमदाबाद । २८ मार्च से गुजरात की लोकसभा की २६ सीट के लिए नामांकन फॉर्म स्वीकार करने की प्रक्रिया का प्रारंभ शुरू होने से अहमदाबाद जिला चुनाव आयोग द्वारा भी शहर की दो सीट के मतदान की कवायद शुरू की गई है। जिला शासकों ने संबंधित विधानसभा मत क्षेत्र के रिर्टनिंग ऑफिसर को ईवीएम और वीवीपेट का वितरण शुरू किया गया है।

लोकसभा चुनाव को लेकर चुनाव विभाग द्वारा की गई व्यवस्था मामले में अतिरिक्त जिला चुनाव अधिकारी मितेश पंडया ने बताया कि, अहमदाबाद जिले के कुल २१ विधानसभा मत क्षेत्र के ईवीएम और वीवीपेट को नागरिक आपूर्ति विभाग के घोडा कैम्प के गोदाम में रखा गया है। यह गोदाम से संबंधित विधानसभा मत क्षेत्र के रिर्टनिंग ऑफिसर के स्ट्रोंग रुम में आवश्यकता के अनुसार ईवीएम और वीवीपेट का वितरण पिछले दो दिन से शुरू किया गया है। अहमदाबाद जिले के कुल ५६२७ पोलिंग स्टेशन होने से १७ फीसदी ईवीएम और वीवीपेट को रिजर्व केटेगरी में रखा गया है। अहमदाबाद जिले में कुल २१ विधानसभा मत क्षेत्र होने की वजह से दस्क्रोई विधानसभा मत क्षेत्र में सबसे ज्यादा ४०० पोलिंग स्टेशन तो, दरियापुर विधानसभा मत क्षेत्र में सबसे कम १८८ पोलिंग स्टेशन है। इस दौरान जिला प्रशासन द्वारा आचारसंहिता लागू होने पर आज दिन तक में इसका भंग करते सार्वजनिक स्थलों पर के १४१९१ और निजी जगहों में १३,०६५ मिलाकर कुल २७,२५७ पोस्टर, बैनर हटाये गये हैं। इसके अलावा जिला चुनाव अधिकारी डॉ. विक्रांत पांडे के मार्गदर्शन के तहत आचारसंहिता भंग करने पर नागरिकों द्वारा सी विजिल एप में की गई कुल ४० शिकायत में से २५ शिकायत का निश्चित समय में ही समाधान किया गया था।

स्वाइन फ्लू से अन्य एक की मौत, 4 नए केस

सूरत। शहर सहित राज्य में स्वाइन फ्लू कहर बरपा रहा है। बुधवार को अन्य एक महिला की उपचार के दौरान मौत हो गई।

वहीं नए 4 केस दर्ज हुए हैं। साथ ही तीन माह में अभी तक 400 से अधिक केस दर्ज हुए हैं। इसमें 10 लोगों क मौत हुई है। बुधवार को शहर के सैयदपुरा विस्तार निवासी 40 वर्षीय महिला की उपचार दौरान मौत हो गई।

जनता कभी कांग्रेस को माफ नहीं करेगी : वाघाणी

भाजपा सत्ता के लिए नहीं, जन सेवा के लिए कार्य करती है

पिछले ७० वर्ष से कांग्रेस एक ही परिवार की चिंता करते आई है देश के गरीबों का कांग्रेस ने सिर्फ शोषण ही किया

गांधीनगर । गुजरात प्रदेश भाजपा मीडिया सेल की अखबारी सूची बताती है कि, गुरुवार को अहमदाबाद पूर्व लोकसभा सीट पर विजय संकल्प सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें भाजपा प्रदेश अध्यक्ष जीतू वाघाणी, भाजपा राष्ट्रीय महिला मोर्चा की अध्यक्षा विजया राहटकर तथा गृह राज्यमंत्री प्रदीपसिंह जाडेजा उपस्थित हुए।

जीतू वाघाणी ने सम्मेलन में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि, भारतीय जनता पार्टी सत्ता के लिए नहीं, जनसेवा के लिए कार्य करती है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह की गांधीनगर लोकसभा सीट के लिए उम्मीदवारी करने का तय होने के साथ ही कांग्रेस परेशान हो गई है। कांग्रेस द्वारा तय किए गए उम्मीदवार को बदलना पड़े ऐसी स्थिति पैदा हो गई है। इसके अलावा गुजरात में अन्य लोकसभा सीट पर भी आज दिन तक अपने उम्मीदवार निश्चित नहीं कर सका। भाजपा के पास नरेन्द्र मोदी के रूप में सक्षम, प्रमाणिक नेतृत्व है, जबकि विपक्ष के पास दूर-दूर तक मजबूत नेतृत्व कर सके ऐसी नेतृत्व का अभाव है। देश की सुरक्षा, समृद्धि तथा विकास के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का नेतृत्व आवश्यक है। पिछले ७० वर्ष से कांग्रेस एक ही परिवार की चिंता करते आई है। देश के गरीबों का कांग्रेस ने सिर्फ शोषण ही किया है। देश की गरीब जनता कभी भी कांग्रेस को माफ नहीं करेगी। जीतू वाघाणी ने आगे बताया है कि, पिछले २६ वर्ष से गुजरात में कांग्रेस सत्ता बिना होने से किसी प्रकार से सत्ता हासिल करने के लिए भागदौड़ कर रही है और केंद्र और गुजरात में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व पर बेबुनियाद बिना आरोप लगा रही है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह की गांधीनगर लोकसभा सीट के लिए उम्मीदवारी करने का तय होने के साथ ही कांग्रेस परेशान हो गई है। कांग्रेस द्वारा तय किए गए उम्मीदवार को बदलना पड़े ऐसी स्थिति पैदा हो गई है। वाघाणी ने आगे बताया कि, केन्द्र में सक्षम नेतृत्व देने के लिए गुजरात से २६ में से २६ सीटों पर भारी बहुमत से जीत दिलाने के लिए अहमदाबाद पूर्व लोकसभा सीट पर विजय विश्वास सम्मेलन के मंच पर से गुजरात की जनता से अपील की। भाजपा राष्ट्रीय महिला मोर्चा की अध्यक्षा विजया राहटकर ने विजय संकल्प सम्मेलन में संबोधित करते हुए कहा कि, पिछले साढ़े ४ वर्ष में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्ववाली सरकार ने महिलाओं पर विशेष ध्यान देकर स्वच्छ भारत अभियान के तहत ९ करोड़ शौचालय के निर्माण तथा देश की ७ करोड़ महिलाओं को प्रधानमंत्री उजवला योजना के तहत मुफ्त गैस कनेक्शन देकर पूरे देश की महिलाओं को सम्मान देने का कार्य किया है।

डोर टू डोर कचरे के अभियान में समस्या : नागरिकों में नाराजगी

अहमदाबाद । अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के शासकों द्वारा घर-घर से कचरे लेने के लिए लागू की गई नई जीपीएस सिस्टम के तहतवार्षिक ६० करोड़ रुपये के हिसाब से पांच वर्ष का ३०० करोड़ रुपये का कॉन्ट्रैक्ट निजी कॉन्ट्राक्टरों को दिया गया है। पुरानी सिस्टम की अपेक्षा तीन गुना ज्यादा कीमत चुकाने के बाद भी शहरीजनों को डोर टू डोर के कामकाज से संतुष्ट नहीं है। एक जोन में दो कॉन्ट्राक्टर को कामकाज सौंपा गया है। लेकिन पूरे प्रॉजेक्ट में बड़े पैमाने पर घोटाले किए जा रहे होने से सोलिड वेस्ट मैनेजमेंट और निजी कॉन्ट्राक्टरों की मिलीभगत के खिलाफ शासक नाराज है। नई जीपीएस सिस्टम भी जैसे कागज पर ही रह गया हो ऐसा दृश्य पैदा हो गया है जिसे लेकर लोगों में भारी नाराजगी देखने को मिल रही है। डोर टू डोर में पहले ठक्करबापानगर में किचन वेस्ट तथा निजी स्कूल के कार्यक्रम से कचरा भरकर इसका वजन बताकर म्युनिसिपल तिजोरी को चुना लगाने का घोटाला पकड़ा गया था। शहर की हद बाहर के बोपल क्षेत्र का कचरे डालकर इसमें घोटाले करने का मामला जोर शोर से उठाया गया था और शाहीबाग में कचरे की गाड़ी में डेब्रीज भरकर घोटाले का पर्दाफाश हुआ है। प्रत्येक कॉन्ट्राक्टर की कचरा गाड़ी को करीब १२०० से १३०० घर में घूमकर कचरे लेना होता है। कचरा गाड़ी को निश्चित पोइन्ट ऑफ इन्टरेस्ट से कचरे लेने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। कचरा गाड़ी निर्धारित पोइन्ट पर से नियमित रूप से कचरे नहीं लिया जाता है। सोसाइटी क्षेत्र में अंदर तक जाकर कचरे उठाने के बदले में कचरा गाड़ी बाहर से कचरे उठाकर रवाना होते है। खुद शासक भाजपा के उच्च पदाधिकारियों ने प्रशासन के समक्ष सोसाइटी क्षेत्र के पोइन्ट ऑफ इन्टरेस्ट में वृद्धि करने की बारबार मांग की है।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, संपादक :- सुरेश मौर्या फोन नं. (9879141480) RNI.No. : GUJHIN/2018/75100, E-mail: krantisamay@gmail.com (subject to surat jurisdiction)